होली में महिलाओं के प्रति अभद्रता पर महात्मा गांधी

(1888 में लगभग 18 साल के मोहनदास गांधी कानून की पढ़ाई करने लंदन को गए। वहाँ वे 'वेजिटेरियन सोसायटी' नाम की संस्था के सदस्य बने जो शाकाहार के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करती थी।

यह संस्था 'वेजिटेरियन' नाम की पत्रिका भी निकालती थी। महात्मा गांधी ने इस पत्रिका के लिए कई आलेख लिखे थे। 22 साल के गांधी जब 1891 में पढ़ाई पूरी करके भारत वापस आ रहे थे, तो इस पत्रिका ने उनका एक लंबा साक्षात्कार भी प्रकाशित किया था।

'वेजिटेरियन' पत्रिका के लिए गांधी ने भारत के त्योहारों पर एक श्रृंखला लिखी थी। ये आलेख उन्होंने विशेष तौर पर ब्रिटिश पाठकों को ध्यान में रखकर लिखे थे और इसमें हमें उस दौर में गुजरात में मनाई जानेवाली होली की झलक मिलती है।

इसी श्रृंखला में 25 अप्रैल, 1891 को एक आलेख उन्होंने 'होली' पर भी लिखा था। इसमें उन्होंने होली और दिवाली का एक सुंदर तुलनात्मक विश्लेषण किया था।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात थी कि होली के अवसर पर विशेषकर महिलाओं के प्रति अशोभनीय व्यवहार और अश्लील भाषा के इस्तेमाल की वजह से उन्होंने इसे विनोदपूर्ण भाषा में अंग्रेजी का 'अनहोली' या अपावन त्योहार कहा था।

हालांकि उन्होंने उम्मीद जताई थी कि जैसे-जैसे भारतीयों में शिक्षा बढ़ेगी, वैसे-वैसे ये अश्लील प्रथाएं समाप्त होती जाएंगी। लेकिन आज सवा सौ साल बाद भी कथित शिक्षित तबकों में होली में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में बहुत अंतर नहीं आया है।

इसलिए गांधी के उस आलेख को आज भी पढ़ना-पढ़ाना दिलचस्प और महत्वपूर्ण हो सकता है।)

इस आलेख में गांधी लिखते हैं-

होली का त्योहार समय की दृष्टि से ईस्टर का जोड़ीदार है। होली हिन्दू वर्ष के पांचवें महीने फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाई जाती है। यह ठीक वसंत का मौसम होता है। पेड़-

पौधे फूलते हैं।

गरम कपड़े छोड़ दिए जाते हैं। महीन कपड़ों का चलन शुरू हो जाता है। जब हम मंदिरों में दर्शन करने जाते हैं, तो और भी प्रत्यक्ष हो जाता है कि वसंत ऋतु का आगमन हो गया है।

किसी मंदिर में प्रविष्ट होते ही (और उसमें प्रविष्ट होने के लिए आपका हिंदू होना जरूरी है) आपको मधुर पुष्पों की सुवास ही सुवास मिलेगी।'

'सीढ़ियों पर बैठे हुए भक्तजन ठाकुरजी के लिए मालाएँ बनाते दिखलाई पड़ेंगे। फूलों में आपको चमेली, मोगरा आदि के सुंदर फूल देखने को मिलेंगे। जैसे ही दर्शन के लिए पट खोले गए कि आपको पूरे वेग से फुहार छोड़ते हुए फुहारे दिखाई देंगे, मंद-सुगंध पवन का आनंद मिलेगा।

ठाकुर जी मृदुल रंगों के हलके वस्त्र धारण किए होंगे। सामने फूलों की राशियां और गले में मालाओं के पुंज उन्हें आपकी दृष्टि से लगभग छिपाए होंगे। वे इधर से उधर झुलाए जाते होंगे और उनका झूला भी सुगंधित जल छिड़की हुई हरी पत्तियों से सजा होगा।'

लेकिन मंदिर के बाहर का दृश्य बहुत आह्लादकारी नहीं होता। वहाँ आपको होली के एक पखवारे पहले से अश्लील भाषा के सिवा कुछ नहीं मिलेगा।

छोटे-छोटे गांवों में तो स्त्रियों का बाहर निकलना ही कठिन होता है—उनपर कीचड़ फेंक दिया जाता है और अश्लील फब्तियां कसी जाती हैं।

यही व्यवहार पुरुषों के साथ होता है और इसमें छोटे-बड़े का कोई भेद नहीं माना जाता। लोग छोटी-छोटी टोलियां बना लेते हैं और फिर एक टोली दूसरी टोली के साथ अश्लील भाषा के प्रयोग और अश्लील गीत गाने में स्पर्धा करती है।

सभी पुरुष और बच्चे इन घृणास्पद प्रतिस्पर्धाओं में शामिल होते हैं। केवल स्त्रियां शामिल नहीं होतीं।

सच बात यह है कि इस पर्व में अश्लील शब्दों का प्रयोग बुरी रुचि का परिचायक नहीं माना जाता। जहां के लोग अज्ञान में डूबे हुए हैं, उन स्थानों में एक-दूसरे पर कीचड़ आदि भी फेंका जाता है।

लोग दूसरों के कपड़ों पर भद्दे शब्द छाप देते हैं। और कहीं आप सफेद कपड़े पहनकर बाहर निकल गए, तो अवश्य ही आपको कीचड़ से सनकर वापस आना होगा। होली के दिन यह सब अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है।

आप अपने घर में हों या बाहर हों, अश्लील शब्द तो आपके कानों को पीड़ा पहुंचाएंगे ही। अगर आप कहीं किसी मित्र के घर चले गए, तो मित्र जैसा होगा उसके अनुसार आप गंदे या खुशबूदार पानी से जरूर ही नहला दिए जाएंगे।

संध्या के समय लकड़ियों या उपलों का भारी ढेर लगाकर जलाया जाता है। वे ढेर अक्सर बीस-बीस फुट के या इससे भी ऊंचे होते हैं। लकड़ियों के ठूंठ इतने मोटे होते हैं कि उनकी आग सात-सात आठ-आठ रोज तक नहीं बुझती।

दूसरे दिन लोग इस आग पर पानी गर्म करके उससे स्नान करते हैं। अब तक तो मैंने यही बताया है कि इस उत्सव का दुरुपयोग किस प्रकार किया जाता है। परंतु संतोष की बात है कि अब शिक्षा की उन्नति के साथ-साथ ये प्रथाएं धीरे-धीरे किंतु निश्चित रूप से मिट रही हैं।'

होली मुबारक

अल्ताफ़ हुसैन हाली पानीपती

तुम अगर चाहते हो मुल्क की ख़ैर
न किसी हमवतन को समझो ग़ैर
हो मुसलमान उस में या हिन्दू
बौद्ध मज़हब हो या कि हो ब्रहमू
जाफ़री होवे या कि हो हनफ़ी
जैन मत होवे या कि हो वैष्नवी
सब को मीठी निगाह से देखो
समझो आँखों की पुतलियाँ सब को!

जो जरा धनी और सुसंस्कृत होते हैं, वे लोग इस त्योहार को बहुत सुंदर ढंग से मनाते हैं। उनमें कीचड़ की जगह रंग के पानी और सुवासित जल का उपयोग किया जाता है। लोटे भर-भरकर पानी फेंकने के बदले पानी छिड़कना भर काफी होता है।

वसंती रंग का इन दिनों में सबसे ज्यादा उपयोग होता है। वह नारंगी रंग के टेसू के फूलों को उबालकर बनाया जाता है। समर्थ लोग गुलाब का जल भी काम में लाते हैं। मित्र और संबंधी एक-दूसरे से मिलते हैं, उनकी दावतें करते हैं और इस प्रकार उल्लास के साथ वसंत का आनंद लेते हैं।

होली के ज्यादातर 'अन-होली' (अपावन) त्योहार से दिवाली के त्योहार में अनेक दृष्टियों से सुंदर भेद हैं। दिवाली का पर्व वर्षा के बाद ही शुरू हो जाता है। वर्षाकाल उपवासों का काल भी होता है, इसलिए उसके बाद दिवाली के दिनों के अच्छे-अच्छे भोजन तथा दावतें और भी अधिक आनंदकारी बन जाती हैं; इसके विपरीत, होली का त्योहार शीतकाल के बाद आता है।

शीतकाल सब प्रकार के पौष्टिक आहार करने का मौसम होता है। होली के दिनों में ऐसे भोजन छोड़ दिए जाते हैं। दिवाली के अत्यंत पवित्र गीतों के बाद होली की अश्लील भाषा सुनाई देती है।

फिर दिवाली में लोग सर्दी के कपड़े पहनना शुरू करते हैं, जबकि होली में उन्हें छोड़ देते हैं। दिवाली आश्विन की अमावस को होती है, फलतः उस दिन खूब रोशनी की जाती है; परंतु होली पूर्णिमा को होने के कारण उस दिन रोशनी अशोभन ही होगी।

यह लिखा था 22 साल के युवा मोहनदास गांधी ने 19 वीं सदी के भारत में। आज हम 21 वीं सदी का मनुष्य होने का दंभ भरते हैं। लेकिन होली जैसा त्योहार हमारी उस मनुष्योचित सभ्यता में छिपे कुछ स्याह रंगों को भी उजागर कर देता है।

इस बार की होली में दिल्ली से जिस प्रकार की खबरें आ रही हैं, उसमें यदि रत्तीभर भी सच्चाई है, तो ऐसी होली के लिए 'अनहोली' से भी ज्यादा विचारोत्तेजक शब्द तलाशने की जरूरत होगी।

बैंक लूट प्रसंग में एक नया धोखा है मोदी-जेटली बिल

100 करोड़ से अधिक के बैंक क़र्ज़ डकार जाने वाले महा ठगों की संपत्ति कुर्क कर वसूली कर लेने के लिए जिस बिल का ढिंढोरा पीटा जा रहा है, वह एक धोखा है। ये वही क़वायद है जैसे एक जेबकतरे के पकड़े जाने पर उसे मारने वालों की भीड़ में उसके बाकी साथी जेबकतरे भी शामिल हो जाते हैं और पीटते पीटते उसे धकियाकर भगा देते हैं।

बैंकों की क़र्ज़ नीति पर ग़ौर किया जाए। बैंक क़र्ज़ के रूप में जो वस्तु (asset) क़र्ज़दार को देता है उसे Primary Security कहते हैं जिस पर क़र्ज़ देने वाले बैंक का चार्ज होता है जिसे बेचकर वसूली की जा सकती है। किसी भी ठग क़र्ज़दार के पास ये सिक्योरिटी मिलती ही नहीं क्योंकि वो पहले ही ठिकाने लगा दी जाती है। ये भी अगर मिलती है तो ग़रीब किसान के पास ही मिलती है जैसे ट्रेक्टर, मोटर आदि।

क़र्ज़ वसूली में अहम होती है सहायक सिक्योरिटी Collateral Security. छोटे क़र्ज़दारों के मामले में इसकी क़ीमत 100 प्रतिशत से भी अधिक होती है यानी 1 लाख के क़र्ज़ के सामने कई लाख की सिक्योरिटी। दरअसल किसानों की आत्म हत्याओं का प्रमुख कारण भी यही है। उसने 1 लाख का फसल क़र्ज़ भी लिया है तो उसकी कई लाख की ज़मीन बैंक के पास होती है जिसे बेचकर आराम से क़र्ज़ वसूली हो जाती है। किसान को अपनी ज़मीन से ऐसा भावनात्मक संबंध होता है कि वो अपनी आंखों और अपने लोगों के सामने अपनी ज़मीन नीलम होते नहीं देख सकता। इसलिए फांसी लटक जाता है। जैसे जैसे क़र्ज़ की रक़म बढ़ती जाती है, Collateral Security का प्रतिशत घटता जाता है। ये एक शुद्ध पूंजीवादी नियम है। 100 करोड़ से अधिक क़र्ज़ में इस सिक्योरिटी की मात्रा क़र्ज़ नीति के अनुसार ही 15 प्रतिशत तक होनी चाहिए जिसे आगे विशिष्ट प्रावधानों द्वारा 5 प्रतिशत तक घटाया जाता है। उदाहरण के लिए, अडानी पर कुल क़र्ज़ 94000 करोड़ है तो उसकी कोलैटरल सिक्योरिटी की कुल क़ीमत 5000 करोड़ भी नहीं होगी। इसकी वैल्यूएशन में भी गोल- माल रहता है। वैसे भी इस सिक्योरिटी को बेचकर वसूली का कानून तो अभी भी है सरफेसी के नाम से।

बैंक वसूली चाहते हैं तो ये क़दम उठाओ:

1) 10 करोड़ से अधिक बैंक डिफॉल्टर्स के नाम प्रमुखता से प्रकाशित करो।
2) ये लोग दूसरी जितनी भी कंपनियों में डायरेक्टर हैं उनका ब्यौरा भी प्रकाशित करो।
3) एक कंपनी का क़र्ज़ डूबने पर उसकी दूसरी कंपनियों की सारी संपत्तियां भी ज़ब्त करो।
4) जैसे ही इनके क़र्ज़ थकबाक़ी हो जाते हैं इन सबके पासपोर्ट जमा करवाओ।
5) ऐसे लोगों के साधन जिन नेताओं ने इस्तेमाल किये उन्हें भी क़र्ज़दारों का साझीदार समझा जाए।
6) कोलैटरल सिक्योरिटी का प्रतिशत बढ़ाओ।

– सत्यवीर सिंह

सफ़रनामा... आधी बॉडी ट्रक के संग संग......

– अभिषेक शुक्ला

मैं नादरगंज पर उन्नाव के लिए किसी प्राइवेट टैक्सी का इंतज़ार कर रहा था..(इंतज़ार ही नसीब है साब) अचानक एक अर्धनिर्मित ट्रक क़रीब आया जो अपने बाक़ी पार्ट्स और बॉडी से विसाल के लिए कानपुर ले जाया जा रहा था...अच्छा मुझे अधूरी चीज़ें खींचती बहुत हैं सो मैं खिंचा चला भी गया..आगे ड्राइवर के बग़ल में बैठते ही मैंने पूछा भाई कितने लोग बिठाओगे.. भाई ने इस ग़रज़ से कि मुझे उसकी बात समझ आ जाये,खिड़की से मुँह निकाल कर इतना गुटखा थूक दिया कि मुझ पर किराए में 50 रुपये बढ़ाने की नैतिक ज़म्मिदारी आन पड़ी..ख़ैर भाई ने जवाब दिया कि भइया तीन बैठत हैं..मुझे लगा मुझे लेकर दो हो ही गए हैं..एक और सही..भाई फ़ौरन चल भी पड़ा..

कई बार कुछ ऐसे भयंकर तजुर्बे होते हैं कि जिन पर क़लम चलाना बग़ैर सीढ़ी के ज़िराफ़ को टीका लगाने जैसा तक़रीबन नामुमकिन होता है.. मैं किस्मत का हमेशा से इतना धनी रहा हूँ कि ऐसे वाक़यात आए दिन पेश आते रहते हैं..वो तो मैं बात बात पर क़लम उठाने का क़ायल नहीं वर्ना साल भर में 230 किताबें लिख कर ब्रह्मांण्ड रेकॉर्ड अपने नाम कर लेता..ऐसा ही एक वाक़्या है कुछ दिनों पहले का..

मैं नादरगंज पर उन्नाव के लिए किसी प्राइवेट टैक्सी का इंतज़ार कर रहा था..(इंतज़ार ही नसीब है साब) अचानक एक अर्धनिर्मित ट्रक क़रीब आया जो अपने बाक़ी पार्ट्स और बॉडी से विसाल के लिए कानपुर ले जाया जा रहा था...अच्छा मुझे अधूरी चीज़ें खींचती बहुत हैं सो मैं खिंचा चला भी गया..आगे ड्राइवर के बग़ल में बैठते ही मैंने पूछा भाई कितने लोग बिठाओगे.. भाई ने इस ग़रज़ से कि मुझे उसकी बात समझ आ जाये,खिड़की से मुँह निकाल कर इतना गुटखा थूक दिया कि मुझ पर किराए में 50 रुपये बढ़ाने की नैतिक जम्मिदारी आन पड़ी..ख़ैर भाई ने जवाब दिया कि भइया तीन बैठत हैं..मुझे लगा मुझे लेकर दो हो ही गए हैं..एक और सही..भाई फ़ौरन चल भी पड़ा..थोड़ी दूर चल कर एक और फिर थोड़ी दूर चल कर दूसरे लड़के को भाई ने दिल में पहले जगह दी जो वहाँ से उस अर्धनिर्मित गाड़ी तक भी उनके लिए बनाई गई..मैं चूंकि ट्रक की सवारियों में आदम ही की तरह पहले इंसान का सा मर्तबा रखता था,इसलिए ड्राइवर की क़ुर्बत भी सबसे ज़ियादः मुझे नसीब हुई..भाई आख़िरी बार कब नहाया था इसका अभी ठीक ठीक अंदाज़ा लगा भी नहीं था कि एक स्पीड ब्रेकर आया भाई ने ज़ोर से ब्रेक मारी और मैं तक़रीबन गियर पर अटक गया...मोइन शादाब भाई का शेर अचानक याद आ गया कि सदियों में दो चार ही रहबर होते हैं..बाक़ी सब स्पीड ब्रेकर होते हैं.. मगर ऐसे स्पीड ब्रेकर!!हालात ऐसे थे कि बाज़ गियर तो मेरे आगे पीछे होने भर से लग जाते थे। तक़रीबन दो किलोमीटर तक तो मैं ड्राइवर की नज़र से नज़र मिलते ही समझ जाता था कि इसे शायद तीसरा लगाना है,मुझे बाएँ झुक जाना चाहिए..बस बाक़ी ये था कि वो मुँह से कहता कि ज़रा पीछे हो जाएँ तो चौथा लगे..ख़ैर मैंने इस ज़ल्लित की ज़िंदगी से हर हाल में पीछा छुड़ाने की ठान ली और बहुत दम लगा के किसी तरह सीट पर पुन: स्थापित हुआ..जैसा कि मैं पहले अर्ज़ कर चुका हूँ जगह इतनी कम थी कि मैं गियर के किसी भी एक तरफ़ दोनों पैर करके बैठ सकूँ सो मुझे मजबूरन अप्राकृतिक तौर पर गियर को पैरों के बीच जगह देना पड़ी..भाई जब भी स्पीड बढ़ाता और चौथा गियर लगाता ..मेरे सीने में धक से कुछ हो के रह जाता कि गियर और गियर के दरमियान सिर्फ़ उतना फ़ासला रह जाता था जितना बारीक दांतों वाली कंघी के दो दांतों के बीच हुआ करता है...तमाम रास्ते नपुंसक होने का ख़तरा उठा कर ऑफिस जाना कोई खेल नहीं..मैं इतना कर्मठ और हिम्मती न होता तो उस दिन अनुपस्थिति तय थी..ख़ैर सोचा इस दर्द भरी घटना को आपके साथ बाँट कर शायद मेरा ग़म ग़लत हो.. शब ब ख़ैर.....